

17 सोना

सोना की आज अचानक स्मृति हो आने का कारण है। मेरे परिचित स्वर्गीय डॉ० धीरेन्द्रनाथ वसु की पौत्री सुस्मिता ने लिखा है, “गत वर्ष अपने पड़ोसी से मुझे एक हिरन मिला था। बीते कुछ महीनों में हम उससे बहुत स्नेह करने लगे हैं, परंतु अब मैं अनुभव करती हूँ कि सघन जंगल से संबद्ध रहने के कारण तथा अब बड़े हो जाने के कारण उसे घूमने के लिए अधिक विस्तृत स्थान चाहिए। क्या कृपा करके आप उसे स्वीकार करेंगी? सचमुच मैं आपकी बहुत आभारी रहूँगी, क्योंकि आप जानती हैं, मैं उसे ऐसे व्यक्ति को नहीं देना चाहती, जो उससे बुरा व्यवहार करे। मेरा विश्वास है, आपके यहाँ उसकी भली-भाँति देखभाल हो सकेगी।”

कई वर्ष पूर्व मैंने निश्चय किया था कि अब हिरन नहीं पालूँगी, परंतु आज उस नियम को भंग किए बिना इस कोमल प्राण जीव की रक्षा संभव नहीं है।

सोना भी इसी प्रकार अचानक आई थी, परंतु वह जब तक अपनी शैशवावस्था भी पार नहीं कर सकी थी। सुनहरे रंग के रेशमी लच्छे के गोठ के समान उसका कोमल लघु शरीर था। छोटा-सा मुँह और बड़ी-बड़ी पानीदार आँखें देखते ही नो लगता था कि अभी छलक पड़ेगी। लंबे कान, पतली सुडौल टाँगें, जिन्हें देखते ही उनमें प्रसृष्ट गति की बिजली की लहर देखने वालों की आँखों में कौंध जाती थी। सब उसके सरस शिथिल रूप से इतने प्रभावित हुए कि किसी चंपकवर्णा रूपसी के उपयुक्त सोना, सुवर्णा, स्वर्णलेखा आदि नाम उसका परिचय बन गए।



मनुष्य मृत्यु को असुंदर ही नहीं, अपवित्र भी मानता है। उसके प्रियतम आत्मीय जन का शव भी उसके निकट अपवित्र, अस्पृश्य तथा भयजनक हो उठता है। जब मृत्यु इतनी अपवित्र और असुंदर है, तब उसे बाँटते घूमना क्यों अपवित्र और असुंदर कार्य नहीं है, यह मैं समझ नहीं पाती।

आकाश में रंग-बिरंगे फूलों की छटाओं के समान उड़ते हुए और वीणा, वंशी मुरज, जलतरंग आदि का वृंदवादन बजाते हुए पक्षी कितने सुंदर जान पड़ते हैं। मनुष्य ने बंदूक उठाई, निशाना साधा और गोली चला दी जिससे कई गाते-उड़ते पक्षी

ढेले के समान धरती पर आ गिरे। किसी की लाल-पीली चोंच वाली गर्दन टूट गई है, किसी के पीले सुंदर पंजे टेढ़े हो गए हैं और किसी के इन्द्रधनुषी पंख बिखर गए हैं। क्षत-विक्षत रक्तस्नात उन मृत-अर्धमृत लघु गातों में न अब संगीत है, न सौंदर्य, परंतु तब भी मारनेवाला अपनी सफलता पर नाच उठता है।

पक्षीजगत में ही नहीं, पशुजगत में भी मनुष्य की ध्वंसलीला ऐसी ही निष्ठुर है। पशुजगत में हिरन जैसा निरीह और सुंदर दूसरा पशु नहीं है। उसकी आँखें तो मानो करुणा की चित्रलिपि हैं, परंतु इसका भी गतिमय सजीव सौंदर्य मनुष्य का मनोरंजन करने में असमर्थ है। मानव को, जो जीवन का श्रेष्ठतम रूप है, जीवन के अन्य रूपों के प्रति इतनी वितृष्णा, विरक्ति और मृत्यु के प्रति इतना मोह और इतना आकर्षण क्यों?

बेचारी सोना भी मनुष्य की इसी निष्ठुर मनोरंजनप्रियता के कारण अपने अरण्य परिवेश और स्वजाति से दूर मानव-समाज में आ पड़ी थी।

प्रशांत वनस्थली में जब मृग-समूह शिकारियों की आहट से चौंककर भागा, तब सोना की माँ ने अपनी संतान को अपने शरीर की ओट में सुरक्षित रखने के प्रयास में प्राण गँवा दिए।

पता नहीं दया के कारण या कौतुकप्रियता के कारण शिकारी मृत हिरनो के साथ चिपके हुए शावक को जीवित उठा लाए। उनमें से किसी के परिवार को सदस्य गृहिणी और बच्चों ने उसे पानी मिला दूध पिला-पिलाकर दो-चार दिन जीवित रखा।

सुस्मिता वसु के समान ही किसी बालिका को मेरा स्मरण हो आया और वह उस अनाथ शावक को मुमूर्षु अवस्था में मेरे पास ले आई। शावक अवांछित तो था ही, उसके बचने की आशा भी धूमिल थी, परंतु मैंने उसे स्वीकार कर लिया। स्निग्ध सुनहले रंग के कारण सब उसे सोना कहने लगे। दूध पिलाने की गायों, गोरूकों, बकरी का दूध आदि सब कुछ एकत्र करके, उसे पालने का कठिन अनुष्ठान आरंभ हुआ।

उसका मुख इतना छोटा था कि उसमें शीशी का निप्पल समाता ही नहीं था, उस पर उसे पीना भी नहीं आता था। फिर धीरे-धीरे उसे पीना ही नहीं, दूध की बोतल पहचानना भी आ गया। आँगन में कूदते-फाँदते हुए भी भक्तिन को बोतल साफ करते देखकर वह दौड़ आती और अपनी तरल-चकित आँखों से उसे ऐसे देखने लगती, मानो वह कोई सजीव मित्र हो।

उसने रात में मेरे पलंग के पाए से सटकर बैठना सीख लिया था, पर वहाँ गंदा न करने की आदत कुछ दिनों के अभ्यास से पड़ सकी। अँधेरा होते ही वह मेरे पलंग के पास आ बैठती और फिर सवेरा होने पर ही बाहर निकलती।



उसका दिनभर का कार्यकलाप भी एक प्रकार से निश्चित था। विद्यालय और छात्रवास के विद्यार्थियों के निकट पहले वह कौतुक का कारण रही, परंतु कुछ दिन बीत जाने पर वह उनकी ऐसी प्रिय साथिन बन गई, जिसके बिना उनका किसी काम में मन ही नहीं लगता था।

दूध पीकर और भीगे चने खाकर सोना कुछ देर कंपाउंड में चारों पैरों को

संतुलित कर चौकड़ी भरती, फिर वह छात्रावास पहुँचती और प्रत्येक कमरे का भीतर-बाहर निरीक्षण करती।

मेस में उसके पहुँचते ही छात्राएँ ही नहीं, नौकर-चाकर तक दौड़े आते और सभी उसे कुछ-न-कुछ खिलाने को उतावले रहते, परंतु उसे बिस्कुट को छोड़कर अन्य खाद्य-पदार्थ कम प्रसंद थे।

छात्रावास का जागरण और जलपान अध्याय समाप्त होने पर वह घास के मैदान में कभी दूब चरती और कभी उस पर लोटती रहती। मेरे भोजन के समय को वह किस प्रकार जान लेती थी, यह समझाने का उपाय नहीं है, परंतु वह ठीक उसी समय भोजन आ जाती और तब तक मुझसे सटी खड़ी रहती जब तक मेरा खाना समाप्त न हो जाता। कुछ नाचल, रोटी आदि उसको भी प्राप्य था, परंतु उसे कच्ची सब्जी ही भाती थी।

घंटी बजते ही वह फिर प्रार्थना के मैदान में पहुँच जाती और उसके समाप्त होने पर छात्रावास के समान ही कक्षाओं के भीतर-बाहर चक्कर लगाना आरंभ करती।

उसे छोटे बच्चे अधिक प्रिय थे, क्योंकि उनके साथ खेलने का अधिक अवकाश रहता था। वे पंक्तिबद्ध खड़े होकर सौना-सोना पुकारते और वह उनके ऊपर से छलाँग लगाकर एक ओर से दूसरी ओर कूदती रहती। यह सरकस जैसा खेल कभी घंटों चलता, क्योंकि खेल के घंटों में बच्चों की एक कक्षा के उपरांत दूसरी आती रहती।

मेरे प्रति स्नेह-प्रदर्शन के कई प्रकार थे। बाहर खड़े होने पर वह सामने या पीछे से छलाँग लगाती और मेरे सिर के ऊपर से दूसरी ओर निकल जाती। प्रायः देखने वालों को भय होता था कि उसके पैरों से मेरे सिर पर चोट न लग जाए, परंतु वह पैरों को इस प्रकार सिकोड़े रहती और मेरे सिर को इतनी ऊँचाई से लाँघती थी कि चोट लगने की कोई संभावना ही नहीं रहती थी।

भीतर आने पर वह मेरे पैरों से अपना शरीर रगड़ने लगती। मेरे बैठे रहने पर वह साड़ी का छोर

मुँह में भर लेती और कभी पीछे चुपचाप खड़े होकर चोटी ही चबा डालती। डाँटने पर वह अपनी बड़ी, गोल और चकित आँखों से ऐसे अनिर्वचनीय जिज्ञासा भरकर एकटक देखने लगती कि हँसी आ जाती।

पशु, मनुष्य के निश्छल स्नेह से परिचित रहते हैं, उसकी ऊँची-नीची सामाजिक स्थितियों से नहीं, यह सत्य मुझे सोना से अनायास प्राप्त हो गया।

अनेक विद्यार्थियों की भारी-भरकम गुरु जी से सोना को क्या लेना-देना था। वह तो उस दृष्टि को पहचानती थी, जिसमें उसके लिए स्नेह छलकता था और उन हाथों को जानती थी, जिन्होंने बलपूर्वक दूध की बोतल उसके मुख से लगाई थी।

यदि सोना को अपने स्नेह की अभिव्यक्ति के लिए मेरे सिर के ऊपर कूदना आवश्यक लागेगा, तो वह कूदेगी ही। मेरी किसी अन्य परिस्थिति से प्रभावित होना, उसके लिए संभव ही नहीं था।

कुत्ता, स्वामी और सेवक का अंतर जानता है और स्वामी के स्नेह या क्रोध की प्रत्येक मुद्रा से परिचित रहता है। स्नेह से बुलाने पर वह गद्गद् होकर निकट आ जाता है और क्रोध करते ही सभौद और दयनीय बनकर दुबक जाता है, पर हिरन यह अंतर नहीं जानता, अतः उसका पालने वाले से डरना कठिन है। यदि उस पर क्रोध किया जाए तो वह अपनी चकित आँखों में और अधिक विस्मय भरकर पालने वाले की दृष्टि से दृष्टि मिलाकर खड़ा रहेगा—मानो पूछता हो, क्या यह उचित है। वह केवल स्नेह पहचानता है, जिसकी स्वीकृति जताने के लिए उसको विशेष चेष्टाएँ हैं।

वर्षभर का समय बीत जाने पर सोना, हिरन-शावक से हिरनो में परिवर्तित होने लगी। उसके शरीर के पीताभ रोएँ ताम्रवर्णी झलक देने लगे। टोंगे अधिक सुडौल और खुरों के कालेगन में चमक आ गई। ग्रीवा अधिक बॉकि और लचीली हो गई। पीठ में भराव वाला उतार-चढ़ाव और सिग्धता दिखाई देने लगी, परंतु सबसे अधिक विशेषता तो उसकी आँखों और दृष्टि में मिलती थी। आँखों के चारों ओर खिंची कज्जलकोर में नीले गोलक और दृष्टि ऐसी लगती थी, मानो नीलम के बल्बों में उजली विद्युत का स्फुरण हो।

इसी बीच फ्लोरा ने भक्तिन की कुछ अँधेरी कोठरी के एकांत कोने में चार बच्चों को जन्म दिया और वह खेल के संगियों को भूलकर अपनी नवीन सृष्टि के संरक्षण में व्यस्त हो



स्वाभाविक चकित दृष्टि गंभीर विस्मय से भर गई।

एक दिन देखा फ्लोरा कहीं बाहर घूमने गई है और सोना भक्तिन की कोठरी में निश्चित लेटी है। आश्चर्य की बात यह थी कि फ्लोरा हेमंत, वसंत या गोधूली को तो अपने बच्चों के पास फटकने भी नहीं देती थी, परंतु सोना के संरक्षण में उन्हें छोड़कर आश्वस्त-भाव से इधर-उधर घूमने चली जाती थी।

संभवतः वह सोना की स्नेही और अहिंसक प्रवृत्ति से परिचित हो गई थी। पिल्लों के बढ़े होने पर और उनकी आँखें खुलजाने पर सोना ने उन्हें भी अपने पीछे घूमने वाली सेना में सम्मिलित कर लिया और मानो इस वृद्धि के उपलक्ष्य में आनंदोत्सव मनाने के लिए अधिक देर तक मेरे सिर के आर-पार चौकड़ी भरती रही, पर कुछ दिनों के उपरांत जब यह आनंदोत्सव पुराना पड़ गया, तब उसकी शब्दहीन, संज्ञाहीन प्रतीक्षा की स्तब्ध घड़ियाँ लौट आईं।

उसी वर्ष गर्मियों में मेरा बद्रीनाथ की यात्रा का कार्यक्रम बना। प्रायः मैं अपने पालतू जीवों के कारण प्रवास में कम रहती हूँ। उनकी देखरेख के लिए सेवक रहने पर भी मैं उन्हें छोड़कर आश्वस्त नहीं हो पाती। भक्तिन, अनुरूप आदि तो साथ जाने वाले थे ही, पालतू जीवों में से मैंने फ्लोरा को साथ ले जाने का निश्चय किया, क्योंकि वह मेरे बिना रह नहीं सकती थी।

छात्रावास बंद था, अतः सोना के नित्य नैमित्तिक कार्यक्रमों भी बंद हो चुके थे। मेरी उपस्थिति का भी अभाव था, अतः आनंदोल्लास के लिए भी अवसर कम था। हेमंत, वसंत मेरी यात्रा और तज्जनित अनुपस्थिति से परिचित हो चुके थे। होटल बिछोड़कर उसे बिस्तर पर रखते ही वे दौड़कर उस पर लेट जाते और भौंकने तथा क्रंदन की ध्वनियों से साम्प्रतिक स्वर में मुझे मानो उपालंभ देने लगते। यदि उन्हें बाँधकर न रखा जाता तो वे कार में घुसकर बैठ जाते या उसके पीछे-पीछे दौड़कर स्टेशन तक जा पहुँचते, परंतु जब मैं चली जाती तब वे उस-भाव से मेरे लौटने की प्रतीक्षा करने लगते।

सोना की सहज चेतना में न मेरी यात्रा जैसी स्थिति का बोध था, न प्रत्यावर्तन का, इसी से उसकी निराशा, निष्ठा और विस्मय का अनुमान मेरे लिए सहज था।

पैदल जाने-आने के निश्चय के कारण बद्रीनाथ की यात्रा में ग्रीष्मावकाश समाप्त हो गया। 2 जुलाई को लौटकर जब मैं बैंगले के द्वार पर आ खड़ी हुई, तब बिछुड़े हुए पालतू जीवों में कोलाहल होने लगा।

गोधूली कूदकर मेरे कंधे पर आ बैठी, हेमंत-वसंत मेरे चारों ओर परिक्रमा करके हर्ष की ध्वनियों से मेरा स्वागत करने लगे, पर मेरी दृष्टि सोना को खोजने लगी। क्यों वह अपना उल्लास व्यक्त करने के लिए मेरे सिर के ऊपर से छलाँग नहीं लगाती? सोना कहाँ है, पूछने पर माली आँखें पोंछने लगा और चपरासी, चौकीदार एक-दूसरे के मुख देखने लगे। वे लोग आने के साथ ही मुझे कोई दुखद समाचार नहीं देना चाहते थे, परंतु माली की भावुकता ने बिना बोले ही उसे दे डाला।

ज्ञात हुआ कि छात्रावास के सन्नाटे और फ्लोरा के तथा मेरे अभाव के कारण सोना इतनी अस्थिर हो गई थी कि इधर-उधर कुछ खोजती-सी वह प्रायः कंपाउंड से बाहर निकल जाती थी। इतनी बड़ी हिरनी को पालने वाले तो कम थे, परंतु उसे खाद्य और स्वाद प्राप्त करने के इच्छुक व्यक्तियों का बाहुल्य था। इसी आशंका से माली ने उसे मैदान में एक लंबी रस्सी से बाँधना आरंभ कर दिया था।

एक दिन न जाने किस स्तब्धता की स्थिति में बंधन-सीमा भूलकर वह बहुत ऊँचाई तक उछली और रस्सी के कारण मुख के बल धरती पर आ गिरी। वही उसकी अंतिम साँस और अंतिम उछाल थी।

सब उस सुनहले रेशम की गठरी से शरीर को गंगा में प्रवाहित कर आए और इस प्रकार किसी निर्जन वन में जन्मी और जन-संकुलता में पली सोना की करुण-कथा का अंत हुआ।

सब सुनकर मैंने निश्चय किया था कि अब हिरन नहीं पालूँगी, पर संयोग से फिर भी हिरन पालना पड़ रहा है।

-महादेवी वर्मा

शब्दांश

गत वर्ष - पिछला साल	चंपकवर्ण - चंपक के फूल जैसे रंग वाली सुदरी
अस्पृश्य - जो छूने योग्य न होना	भयजनक - डर उत्पन्न करने वाला
रक्तस्नात - खून से भींगा	धमकीला - नष्ट करने की क्रिया
निष्ठुर - कठोर	प्रशांत - शांत, पूरी तरह से शांत
अरण्य - जंगल	कौतुकप्रियता - खेल-तमाशा या हँसी-मजाक का भाव
मुमूर्षु अवस्था - मरण की अवस्था	अवांछित - जिसकी इच्छा न की गई हो
स्निग्ध - चिकना, सुंदर	अनुष्ठान - विशिष्ट क्रिया, पूजा-पाठ
हिरन-शावक - हिरन का शिशु	पीताभ - पीली चमक देता हुआ
कज्जलकोर - काजल की रेखा	स्फुरण - हरकत
नित्य-नैमित्तिक - रोज के काम	तज्जनित - उससे उत्पन्न
उपालंभ - शिकायत	प्रत्यावर्तन - पलट के आना
स्तब्धता - जड़ता, निश्चेष्टता	जन-संकुलता - लोगों की भीड़-भाड़
बंकिम - टेढ़ा, तिरछा	सभीत - भय के साथ
ग्रीवा - गरदन, गला	वृंदवादन - सामूहिक रूप से वाद्य यंत्रों को बजाना

प्रश्न-अभ्यास

पाठ से

1. महादेवी वर्मा को अपना निश्चय क्यों बदलना पड़ा?
2. सोना के दिनभर के कार्यकलाप को अपनी भाषा में लिखिए?
3. सोना को छोटे बच्चे क्यों अच्छे लगते थे?
4. भाव स्पष्ट कीजिए
 - (क) जब मृत्यु इतनी अपवित्र और असुंदर है, तब उसे बाँटते घूमना क्यों अपवित्र और असुंदर कार्य नहीं है।
 - (ख) पशु, मनुष्य के निश्छल स्नेह से परिचित रहते हैं, उसकी ऊँची-नीची सामाजिक स्थितियों से नहीं।

पाठ से आगे

1. सोना के सौंदर्य का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।
2. पशु-पक्षियों की सुरक्षा के लिए आप क्या-क्या उपाय करेंगे?
3. क्या होता यदि -
 - (क) हिरन के तीन-चार दिन के बच्चे को लेखिका के पास न लाया जाता।
 - (ख) हेमंत-वसंत और फूलों सोना से दोस्ती न करते।
 - (ग) लेखिका बट्टीनाथ की यात्रा पर न जाती।

व्याकरण

1. छंदों के प्रत्येक वर्ग के नासिक्य व्यंजन को अनुस्वार (-) प्रकट करता है जबकि अनुनासिक (ँ) स्वर का गुण है। पाठ में आए पाँच अनुनासिक और पाँच अनुस्वार शब्दों को सूची बनाइए।

अनुनासिक

- (क)
- (ख)
- (ग)
- (घ)

अनुस्वार

- (क)
- (ख)
- (ग)
- (घ)

2. इन वाक्यों में रेखांकित शब्दों के कारक चिह्न की पहचान कीजिए?

(क) मैंने निश्चय किया कि अब हिरन नहीं पालूँगी।

(ख) जिसमें उसके लिए स्नेह छलता था।

(ग) गोधूली कूदकर मेरे कंधे पर आ बैठी।

(घ) हिरन शेर से डरता है।

(ङ) अरे! यह तो बहुत सुंदर है।

(च) मेरी दृष्टि सोना को खोजने लगी।

3. कई बार दो शब्द मिलकर भी एक शब्द बनाते हैं, जैसे :-

छात्र + आवास = छात्रावास

इस प्रकार कुछ शब्द बनाइए।

गतिविधि

1. महादेवी वर्मा द्वारा रचित पुस्तक 'मेरा परिवार' से उनके पालतू पशु-पक्षी के शब्द चित्रों की जानकारी प्राप्त कीजिए।
2. अधिक-से-अधिक लोग पशु-पक्षियों से प्रेम करें, इस पर कोई छोटी सी कविता या निबंध लिखिए।

